The Journal of Scientific Discourse
International, Multi-Disciplinary Peer-Reviewed Quarterly Research Journal
https://gaveshana.org/the-journal-of-scientific-discourse/

Vol-1, Issue-1
Oct-Dec 2024
ISSN: 3049-0081 (Print)

Content

1. Buddhist Multi-dimensional Resolution of the Problem of Free Will and Responsibility
Dinesh Kumar 1-14

2. बराछ–पाण्डवन पुरास्थल से प्रतिवेदित लघुपाषाण उपकरण एवं शैलचित्रः एक अध्ययन
देवीदीन पटेल 15-28

3. आलोच्यकालीन दशक के मुख्य उपन्यासों का अध्ययन
पुष्प लता, धनेश कुमार मीना 29-38

4. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र
ऋषिका वर्मा 39-44

5. "आज़ादी मेरा ब्रांड" - पुस्तक समीक्षा
दीप्ती पटेल, सुनील साहू 45-58

The Journal of Scientific Discourse
International, Multi-Disciplinary Peer-Reviewed Quarterly Research Journal
https://gaveshana.org/the-journal-of-scientific-discourse/

Vol-1, Issue-1
Oct-Dec 2024
ISSN: 3049-0081 (Print)

Buddhist Multi-dimensional Resolution of the Problem of Free Will and Responsibility

Dinesh Kumar
Research Scholar, Department of Philosophy
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar-470003, (M.P.), India.
E-mail - dineshneo90@gmail.com

Abstract

The sense of free will and responsibility is the essential pillars of moral act. There is impossibility of moral action without the sense of free will and responsibility. Buddhism provided us the realist account to describing the nature of free will and responsibility and essential connection in it. Buddhist process of purification (Ashtangika Marga) is nothing but the unfolding of the sense of free will. The higher sense of free will is the causal source of greater responsibility and responsibility gives us the ground how to exercising the sense of free will. Buddhism describes the role of free will and the sense of responsibility in the development of moral character in order to attain the love, compassion, wisdom.

Key Words: - *Phenomenology, Prajna, Consciousness, Free-will, Responsibility, Astangika-Marga, Pratityasamutpada, Sunyata, Nirvana.*

The Journal of Scientific Discourse
International, Multi-Disciplinary Peer-Reviewed Quarterly Research Journal
https://gaveshana.org/the-journal-of-scientific-discourse/

Vol-1, Issue-1
Oct-Dec 2024
ISSN: 3049-0081 (Print)

''बराछ–पाण्डवन पुरास्थल से प्रतिवेदित लघुपाषाण उपकरण एवं शैलचित्र : एक अध्ययन''

देवीदीन पटेल
इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केन्द्रीय) वि0वि0
श्रीनगर गढ़वाल, 246174, उत्तराखण्ड, भारत
Email: devideenpatel577@gmail.com

शोध आलेख सार

जैसा की सर्वविदित है कि भारतीय भू–भाग का मध्य क्षेत्र प्रागैहासिक काल से ही संस्कृतियों का पोषण स्थल रहा है। मध्यप्रदेश 18 वीं सदी से ही पुरातात्विक अध्ययन का केन्द्र रहा है, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र से बहुतायत मात्रा प्रागैतिहासिक कालीन पुरास्थल प्रतिवेदित हैं। इसी क्रम में शोधार्थी द्वारा पन्ना जिले की प्रागैतिहासिक कालीन संस्कृतियों का अध्ययन किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप पन्ना क्षेत्र से भी बहुतायत मात्रा में प्रागैतिहासिक कालीन पुरास्थलों को प्रकाश में लाया गया हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र मध्यप्रदेश के पन्ना जिले में स्थित बराछ–पाण्डवन पुरास्थल से प्रतिवेदित लघुपाषाण उपकरण एवं शैलचित्रों के अध्ययन से संबंधित है। यह पुरास्थल शोधार्थी द्वारा अपने पीएचडी कार्य के दौरान किये गये पुरातात्विक सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप पुर्न–सर्वेक्षित किया गया है। अन्वेषण के दौरान पुरास्थल पर तीन शैलाश्रयों में प्रागैतिहासिक कालीन शैलचित्र तथा शैलाश्रय संख्या प्रथम के धरातल से लघुपाषाण उपकरण प्रतिवेदित किये गये हैं। यहाँ से प्राप्त लघुपाषाण उपकरणों में ब्लेड, फलक, क्रोड, ब्यूरिन, छिद्रक आदि प्रकार उपकरण सम्मिलित है तथा इन शैलाश्रयों के शैलचित्रों की विषवस्तु में मानवाकृतियां, शिकार दृश्य, युद्ध दृश्य, खाद्य संग्रहण तथा विविध प्रकार के पशु एवं जानवरों की आकृतियों को चित्रित किया गया हैं।

The Journal of Scientific Discourse
International, Multi-Disciplinary Peer-Reviewed Quarterly Research Journal
https://gaveshana.org/the-journal-of-scientific-discourse/

Vol-1, Issue-1
Oct-Dec 2024
ISSN: 3049-0081 (Print)

आलोच्यकालीन दशक के मुख्य उपन्यासों का अध्ययन

पुष्प लता[1] धनेश कुमार मीना[*]

[1]हिन्दी विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसवां, अलीगढ, 202145, उत्तर प्रदेश, भारत
[*]कला विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसवां, अलीगढ, 202145, उत्तर प्रदेश, भारत

Email: - latapushp386@gmail.com

शोध आलेख सार

आलोच्यकालीन दशक में विवेकीराय के दो उपन्यास प्रकाशित है 'सोना माटी' (1983 ई0) और 'समर शेष हैं। (1988 ई0) जिसमें विवेकीराय की उपन्यास कला का वास्तविक रूप दिखाई पड़ता है। 'सोना माटी' गाजीपुर और बलिया के बीच लगभग चालीस पचास किलोमीटर के वृत्त में फैले हुए करइल क्षेत्र के जीवन को केन्द्र में रखकर लिया गया है। उपन्यासकार ने वहाँ के जीवन में घुले मिले संस्कारों, समारोहों, पर्व–त्योहारो, गीतों के माध्यम से व्यक्त होने वाली अनुभूतियों, लोक परम्पराओं और मूल्यों की बहुमूल्य सम्पदा को गहरी संवदेनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। विवेकी राय ने ग्रामीण जीवन में पैदा हुए समकालीन मूल्य संकट का चित्रण भी तन्मयता से किया है, पर वह किसी भावुकतापूर्ण दृष्टि का परिचायक नहीं है। समर शेष है' में विवेकी राय ने कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर अपनी रचनाशक्ति का परिचय दिया है 'समर शेष है' की सबसे आकर्षक विशेषता यह है कि उसके विजन के केन्द्र में गाँव की एक कच्ची सड़क है जो किसी अर्थ में उपन्यास की नायिका भी है। यह सड़क पूर्वांचल के पिछड़े–पन की प्रतीक है। इस उपन्यास के विजन का सबसे मुख्य पक्ष संघर्ष है। नये तरह के पात्रों की सृष्टि की दृष्टि से भी 'समर शेष है' उल्लेखनीय उपन्यास है। इसमें आज की मूल्य विहीन दिग्भ्रमित हिंसक पीढ़ी का चित्र भी सामने आता है,जो अपने आचरणों से अराजकता की स्थिति पैदा किए हुए है।

बीज शब्द *– सोना माटी, ग्राम देवता, विकल्प, आँख मेरी बाकी उनका, लापता आदि।*

The Journal of Scientific Discourse
International, Multi-Disciplinary Peer-Reviewed Quarterly Research Journal
https://gaveshana.org/the-journal-of-scientific-discourse/

Vol-1, Issue-1
Oct-Dec 2024
ISSN: 3049-0081 (Print)

पर्यावरणीय नीतिशास्त्र

ऋशिका वर्मा
दर्शनशास्त्र विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केन्द्रीय) वि0वि0
श्रीनगर गढ़वाल, 246174, उत्तराखण्ड, भारत
Email: - rishika.verma75@gmail.com

शोध आलेख सार

दर्शन में पर्यावरणीय नीतिशास्त्र, व्यवहारिक दर्शन का एक स्थापित क्षेत्र है, जो आवश्यक प्रकार के तर्कों का पुनःनिर्माण करता है जो प्राकृतिक संस्थाओं की रक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी उपयोग के लिए किए जा सकते हैं। पर्यावरण नैतिक दर्शनशास्त्र का वह भाग है जो मानव और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच नैतिक संबंधों को समझाता है। यह आवश्यक है कि मनुष्य को प्रकृति के साथ सद्भाव में जीना सिखना चाहिए। प्रकृति के तंत्र के बीच संतुलन को बनाए रखने के लिए विभिन्न घटकों के बीच विभिन्न प्रक्रियाओं जिनमें स्वांगीकरण एवं पुनः चक्रीकरण शामिल है, संतुलित होना चाहिए, लेकिन बढ़ती मानव जनसंख्या के द्वारा संसाधनों के अतिदोहन के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाता है। प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल और आर्थिक विकास के कारण पारिस्थितिकीय समस्याओं की वृद्धि होती है। आर्थिक उन्नति की प्राप्ति पर्यावरण की कीमत पर मिलती है। जिसके कारण प्रदूषण में बढ़ोत्तरी, जैव विविधता में कमी एवं आधारभूत संसाधनों की अत्यधिक कमी हो जाती है। नैतिक मूल्यों या आचारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि यह किसी भी विकासात्मक प्रक्रियाओं की शक्ति एवं कमजोरियाँ होती है जैसे वनोन्मूलन बांध का निर्माण, खनन आर्दभूमि से पानी निकास इत्यादि। बहुत से ऐसे नैतिक निर्णय लिये गये हैं कि मनुष्य को अपने पर्यावरण के प्रति सद्भावना बनाए रखने की जरुरत है।

बीज शब्द *– पर्यावरणीय नीतिशास्त्र, प्रौद्यौगिकी, आर्थिक विकास, नैतिक मूल्य।*

The Journal of Scientific Discourse
International, Multi-Disciplinary Peer-Reviewed Quarterly Research Journal
https://gaveshana.org/the-journal-of-scientific-discourse/

Vol-1, Issue-1
Oct-Dec 2024
ISSN: 3049-0081 (Print)

"आज़ादी मेरा ब्रांड" - पुस्तक समीक्षा

दीप्ती पटेल[1] , सुनील साहू*

[1] शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर-470002, (म.प्र.) भारत

* अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर-470002, (म.प्र.) भारत

Email: - deeptipatel612sgr@gmail.com

पुस्तक विवरण

पुस्तक - आज़ादी मेरा ब्रांड, लेखिका - अनुराधा बेनीवाल, प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष - जनवरी 2016, पेज – 188, ISBN- 978-81-267-2836-7

"वो कहते है ना, आज़ादी ना 'लेने' की चीज है, ना 'देने' की। छीनी भी तो, क्या - आज़ादी, यह तो जीने की चीज है।"

भूमिका - इस पुस्तक के शीर्षक ने ही हमें आकर्षित किया और जैसे- जैसे आगे पढ़ते गए, लगता गया कि शीर्षक का नाम लेखिका द्वारा एकदम उपयुक्त चयनित किया गया है। आसपास के माहौल में वर्षों से आजादी - आजादी के नारे कानों में किसी न किसी तरह गूंजते रहे हैं! तो यह उत्सुकता होना स्वाभाविक ही रही कि लेखिका के 'आजादी मेरा ब्रांड' में आज़ादी के क्या मापदंड है? इस पुस्तक को पढ़ने के बाद भारतीय समाज और यूरोप के देशों में महिलाओं की तुलनात्मक स्थिति का चित्रण मिलता है। लेखिका अनुराधा पहले भारत में घूमने का वर्णन करती है फिर ब्रिटेन (लंदन) में नौकरी के संघर्षों का और फिर पेरिस, ब्रस्सल्स, एम्स्टर्डम, बर्लिन, प्राग, ब्रातिस्लावा, बुडापेस्ट, इंसब्रुक, बर्न और अंत में हमवतन लड़कियों के नाम अपील/संदेश लिखती हैं। किसी भी घटना की व्याख्या इस प्रकार की गई है कि लगे जैसे भारतीय महिलाओं को यूरोप की महिलाओं से मिलाया जा रहा है और भारत की सामाजिक स्थिति के कारणों को भी स्पष्ट या साथ ही यूरोप के देशों में सहजता के कारण जीवन कितना बेहतर है, यह भी तर्क देते हुए लिखा है। ऐसे लगता है कि जैसे यहां बैलगाड़ी में स्त्री यात्रा कर रही हो और वहां मर्सिडीज़, ऑडी में यात्रा कर रही हो! इतना अंतर अच्छे तरीके से जिस पुस्तक में बताया गया हो

* Corresponding Author: डॉ. सुनील साहू, Email:- sunil.sahusgr@gmail.com